The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

आदिवासी स्त्री का यथार्थ :'रेशमा' कहानी के विशेष संदर्भ में

डॉ. शालिनी जोस

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, भारत माता कॉलेज(स्वायत्त),कोची -682021

shalinijose@bharatamatacollege.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17643271

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

जसिंता केरकेट्टा, नारी शोषण, घरेलू हिंसा, स्वत्व बोध, शिक्षा, अस्मिता, पहचान

ABSTRACT

सदियों से हर जमाने में हर एक देश में स्त्रियों के उद्धार के लिए आंदोलन होते आ रहे हैं। इन आंदोलनों से स्त्रियों की जिंदगी में काफी बदलाव भी आया है। लेकिन भारत में हम देखते हैं कि आए दिन स्त्रियों के प्रति अत्याचार बढ़ रहा है। लेकिन सामूहिक बलात्कार जैसे हीन, निकृष्ट कुकर्म बहु संख्या में हो रहे हैं। यद्यपि हम चांद तक पहुंचे हैं ,सूर्य को अभी छूने वाले हैं स्त्रियों के प्रति जो मानसिकता है उसमें काफी बदलाव नहीं आया है। आजकल समाचार पत्रों में जो खबरें आती है वह हमें भयभीत करने वाली है। एक साल की बच्ची से लेकर साठ होते बूढी स्त्री तक पुरुष के यौन शोषण से मुक्त नहीं है। हम दावा करते हैं कि शिक्षा का स्तर बढ रहा है, तकनीकी के मामलों में हम दुनिया में अव्वल बनते आ रहे हैं ,दुनिया के देशों में भारत योग और आत्मसंयम के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन स्त्री के प्रति भारतीयों की नजरिया में बदलाव नहीं आया है । झारखंड की प्रसिद्ध आदिवासी लेखिका जसिंता केरकेट्टा की कहानी रेशमा' ये सब बातें हमारे दिमाग में ठूंस देती है। अपनी कहानी द्वारा जसिंता केरकेट्टा हमारे आगे एक ग्रामीण लड़की की दर्दनाक जिंदगी सामने रखती हैं। एक हंसमुख लड़की की जिंदगी क्यों इतनी त्रासद बन गई इस पर हमें सोचना है । स्त्री अब भी एक देह मात्र रह गयी है। उसका अपना अस्तित्व और व्यक्तित्व नहीं है। हमेशा पुरुष के कदमों के नीचे, दम घुटती ज़िंदगी जीना पडता है । पुरुष वर्चस्ववादी समाज में स्त्री दोयम दर्जा का अधिकारी है। घर की चहारदीवारी में पडी रहकर सारा काम निभानेवाली स्त्री के लिये विश्राम करने के

लिये भी एक कमरा नही है । नियम हमेशा स्त्री और पुरुष के लिये अलग है । रेशमा कहानी इस अन्याय की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है।

हर मार्च 8 महिलाओं पर सोचने का अतिरिक्त अवसर देता है। पिछले वर्ष ,महिला दिवस आचरण में भारत की महिलाओं के लिए खुशी की एक बात हुई थी कि महिला आरक्षण बिल पास हो गया था । इस बिल के मुताबिक लोक सभा और राज्यसभा दोनों में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीट यानी 33प्रतिशत सीटें आरक्षित है। यह महत्वपूर्ण बात है कि 1996 से लेकर महिला आरक्षण की बात हो रही थी और अब ही वह सार्थक हो गई है। इस विधेयक के निर्माण में यही बात जाहिर होती है कि समाज के निर्माण में महिलाओं की भागीदारी की महता को देश भर में स्वीकारने लगा है।महिला आरक्षण बिल सिर्फ एक संवैधानिक प्रावधान नहीं है।यह पूरे राष्ट्र की अस्मिता का प्रश्न है। विकसित राष्ट्र की पहचान का मसला है।किसी भी समाज के विकास का आकलन वहां के स्त्री समाज की नियति के आधार पर हो सकता है।

स्त्री शिक्षा का स्तर और साक्षरता, महिला स्वास्थ्य, उनकी रोजगार की स्थिति तथा समाज में निर्णय लेने और नीति निर्धारण में उसकी भागीदारी का स्तर आदि सामाजिक प्रगति के सूचकांक है।भारत जैसे पितृसत्तात्मक विचारधारा रखने वाले देश में स्त्रियों के आरक्षण की सख्त जरूरत है ।हमें इस बात पर गर्व है कि भारत की प्रथम नागरिक एक वनिता है ।भारत की पहली प्रधानमंत्री एक वनिता थी जिनका नाम आज भी हमारे ज़ुबान पर एक दृढ़ व्यक्तित्व वाली महिला के रूप में कायम है। भारत की अबकी वित्त मंत्री एक वनिता है। खेल - कूद, विज्ञान, मनोरंजन, व्यापार आदि क्षेत्रों में भी भारत की महिलाएं विजय पताका फहरा रही है।अब अधिकांश महिलाएं छोटे बड़े कामों के लिए घर की चार दीवारी से बाहर निकालने लगी हैं।– यह सब गर्व करने वाली बातें हैं। लेकिन इसके साथ ही साथ रोज अखबारों में ऐसी खबरें भी आती हैं जो हमारे तन और मां को व्यथित करती हैं। बरस 2 की बच्ची से लेकर 70 बरस की बूढी तक का बलात्कार किया जा रहा है।

दहेज़ नाम पर हो रही स्त्रियों की आत्महत्या और हत्याओं की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। खेलकूद में हो रहे शोषण की खबरें आती ही रहती हैं। अशिक्षित ,गंवार ,दलित और आदिवासी लोगों का शोषण जोरों पर है। आदिवासी स्त्री दोहरी पीड़ा झेल रही है -एक आदिवासी होने की और दूसरी स्त्री होने की।

एक और विकास, तकनीकी, विज्ञान आदि के शिखर पर खड़ा देश दूसरी ओर स्त्रियों के प्रति हो रहे अतिक्रमण के नाम पर सर झुकाए खड़ा है। इन स्त्रियों पर हो रहे अन्याय और अतिक्रमण का चित्रण जसिंता केरकेट्टा अपनी कहानी 'रेशमा' में करती है।

जसिंता केरकेट्टा आदिवासी युवा लेखिका है जिसका जन्म झारखंड में हुआ था । वह सामाजिक कार्यकर्ता है जो आदिवासियों के सुधार और उधर के लिए काम कर रही है। रेशमा' कहानी वागर्थ में 2023 अप्रैल में छपी थी।

भारत की दलित और आदिवासी जनता सुविधाओं से वंचित है । मुख्य धारा के लोगों द्वारा आस्वादित अधिकारों से मीलों दूर जी रहे वे लोग अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं।'रेशमा' में जसिंता 16 साल की एक आदिवासी लड़की की कहानी बता रही है ।आत्मकथा शैली में यह कहानी लिखी गई है। रेशमा नाम की लड़की की लाश एक पेड़ पर टंगी हुई है ।और रेशमा की आत्मा अपनी देह से उतरकर उसकी पिछली कहानी याद कर रही है और अबकी हालत पर सोच रही है। उसके सोच में गांव और शहर की स्त्रियों की जिंदगी से संबंधित कई सवाल उभर आते हैं। यह कहानी स्त्रियों पर हो रहे अतिक्रमणों पर सोचने को हमें बाध्य करती है।

रेशमा झारखंड के एक आदिवासी गोत्र की आठवीं दर्जे में पढ़ने वाली एक लड़की है जो धान कूटने के बाद स्कूल जाती है ।और स्कूल से वापस आकर भी धान कूटकर, भूसे से भरा चावल साफ करती ,भात रींध करती थी। मेहनती किसान परिवार की मेहनती लड़की। बड़ी चुलबुली। गांव में वही एक लड़की थी जिसका रंग श्वेत था। सब लोग उसकी मां से कहा करते थे कि उसकी लड़की सुंदर है। यही अभिमान था रेशमा को। मां चाहती थी कि उसकी बेटी अच्छी तरह पढे और किसी बड़ी नौकरी में लग जाए। वही रेशम की भी चाह थी।

तभी वहां उसके चाचा का बेटा सोमरा आता है। वह काम के नाम पर गुजरात के शहर में था और शहर से वापस आने पर उसका नाम समर हो गया ।वह गांव की सुंदर लड़की की छेड़खानी करने लगता है। वह भी धान कूटने के लिए आता है। और कुछ ही दिनों में रेशमा को अपने वश में कर लेता है। रेशमा अपने इस प्रेम संबंध के बारे में कई बार सोचती हैं। वह सोचती है कि चाचा का बेटा है। रिश्ते में भाई बहन है। उसके गोत्र में प्रेम, प्रेम विवाह ,विवाह से पहले बच्चा होना , शारीरिक संबंध होना इन सब का कोई मनाही नहीं है । गांव में यह सब तो सहज बातें हैं। लेकिन एक ही गांव के एक ही गोत्र के बीच के संबंध को वे समर्थन नहीं करते । यदि रिश्तेदार हो तो कभी नहीं।

रेश्मा के संदेह को सोमरा एकाएक टाल देता है यह कहकर कि शादी के बाद हम किसी शहर जाकर बसेंगे तो वहां के लोग थोड़े ही जानते हैं कि हम रिश्ते में भाई- बहन हैं। दोनों के बीच शारीरिक संबंध होता है और रेशमा गर्भिणी बन जाती है ।सोमरा से कहा तो उसने कहा कि किसी से मत कहना। मां ने पूछा कि कौन इसका उत्तरदाई है तो रेशमा ने कुछ नहीं कहा। और एक दिन रात को सोमरा आकर रेश्मा से बाहर आने को कहता है। और राउरकेला जाने की बात कहता है। और साथ में कपड़ा भी लेने

को कहता है। रेशमा जब बाहर निकलती है तो देखती है कि चार लड़के और वहां खड़े हैं तो वे क्यों आए हैं यह पूछने पर सोमवार ने कहा कि हम लोग दूर जाते हैं न? कोई काम आ जाए तो ये मदद आएंगे। अपने गांव को छोड़कर जाते वक्त रेशम के मन में यही प्रतीक्षा है कि राउरकेला जाकर उसका गर्भपात होगा और वापस आकर मां की इच्छा के अनुसार खूब पढेगी और नौकरी भी पाएगी। जब गाड़ी बिसरा स्टेशन पर पहुंची तो वे पांच लड़के उतरते हैं और रेशमा से उतरने के लिए कहते हैं। रेशमा ने सोचा कि गाड़ी तो स्टेशन पर पहुंची नहीं है। हवा में थोड़ी देर आराम करने के लिए होगी यह सोचकर रेशमा बाहर निकलती है। तो कोई आकर उसके मुंह बंद करके उसको खींच कर घसीटकर पेड के नीचे ले गया। उसको पता चलता है कि उसके प्रेमी ने ही उसको घसीट लिया था और एक-एक करके पांचों ने उसके साथ क्रूर बलात्कार किया। रेशम उन लडकों को पहचानती है। वे सब तो उसके सगे संबंधी हैं।वही लड़के जो उसके ही इलाके मे घुमा फिरा करते थे।उसकी चीख किसी ने नहीं सुनी। क्योंकि गाड़ी चल रही थी और उसके बाद रेशमा की लाश को वहां पेड़ पर टांग दिया गया। रेशम की लाश से आत्मा उतरती है और सोच रही है कि रेशमा और चाचा के बेटे के बीच शादी हो सकता था। लेकिन उसने ऐसा क्यों किया। पेड़ पर टंगी हुई रेशमा कुछ सवाल और सोच हमारे सामने रखती है जिन पर हमें, जो सभ्य होने का दावा करते हैं, जो शिक्षित होने का दर्प रखते हैं ,जो आधुनिक होने का गर्व दिखाते हैं ,उनका उत्तर देने के लिए बाध्य है।

अपने मांस को खाने के लिए आए चील और कौवे को देखकर वह पूछ रही है कि "आदमी और इनमें क्या फर्क है यह भी इंसानी देह को मांस का टुकड़ा समझते हैं । पर ये चील - कौवे - गिद्ध आदमी से बेहतर है। ये जिंदा इंसान के नाम को लोथड़ा नहीं समझते। ये किसी की रूह का गला नहीं घोंटते ।किसी का बलात्कार नहीं करते ।और उसे पेड़ पर इस तरह नहीं टांग जाते। स्त्री को इंसान समझना और खुद भी इंसान हो जाना तो दूर की बात है आदमी को इनकी तरह होने में भी बहुत वक्त लगेगा। " 1उसके मन में यह भी सवाल उठता है कि आदमी उजाले में क्या होता है और अंधेरे में क्या? और अपने ही लोगों द्वारा सामूहिक बलात्कार की घटना गांव में यह पहली ही थी। समाज और गांव का बदला क्या इस तरह है?

रेशमा की मृत्यु की खबर चारों ओर फैल जाती हैं। अखबारों में तस्वीर छप जाती है और रेशमा ने सोचा कि घर में यह जानकर बहुत कोहरा मच जाएगा। घर वाले मिलकर बलात्कारियों को सजा दिला कर ही रहेंगे । लेकिन रेशमा ने देखा कि ऐसा कुछ नहीं हुआ।बाबा बहुत रोया और खुद को कोसा कि उनकी गलती से रेशम का यह हाल हुआ। मां बुरी तरह रोई । दिनों तक कुछ खाया पिया भी नहीं । भाई भी बहुत दुखी थे। पूरा घर श्मशान की तरह हो गया। एक बात रेशम को अच्छी नहीं लगी कि सब लोग दुखी जरूर थे । पर हर कोई इस बात को दबा देना चाहता था। बाबा ने यह भी कहा कि जो चला गया तो चला गया।

लड़की ही अपनी ठीक नहीं थी तो कोई क्या कर सकता है? रेशमा को अपनी मां की हालत पर तरस आती है। वह इस यथार्थ से अवगत हो जाती है कि लड़की के लिए रोने और सहने केलिए उसकी मां ही होगी। स्त्री की व्यथा एक स्त्री ही समझ सकती है।

माँ मुझे न्याय दिलाने के लिए लड़ना चाहती थी। बलात्कारियों को सजा दिलाना चाहती थी। लेकिन उसे याद आया कि इस घर में उसकी खुद की कोई कीमत नहीं। घर पति का, खेत पति का, संपत्ति पति की ,शक्ति पति की ,निर्णय पति का और बेटी का बलात्कारी भी तो पति के भाई का लड़का और उसी की मित्र मंडली। इस घर में, इस खेत में वह आजीवन खटने के लिए तो है। लेकिन कोई निर्णय लेने, हक मांगने ,न्याय चाहने और अन्याय के खिलाफ कुछ बोल सकने के लिए नहीं है।"2

रेशमा देखती है कि गांव में इस बात को लेकर कोई पंचायत भी नहीं हुए। सब कह रहे थे कि लड़की अच्छी नहीं है तो क्या करें। गांव का और घर की इज्जत रखने के लिए चुप रहना ही अच्छा है। सोमरा उस घटना के बाद फरार था। लेकिन वह रात में कभी-कभी गांव आता रहताथा। दोस्तों और परिवार मिलकर प्रभात में वह गायब होता। बाकी लड़के भी उसी प्रकार ही आते जाते रहते थे। लोग उस घटना को भूल गए। और इस प्रकार सब चुप रहकर रेशम के घर और गांव की इज्जत बचाए रखा।

कहानी इस प्रकार समाप्त होती है कि "ट्रेन अभी चलती है उस तरह। बिसरा स्टेशन से होकर गुजरती है। वह पेड़ अब भी इस तरह खड़ा है। मेरे सगे -संबंधी अक्सर इस ट्रेन से राउरकेला जाते हैं।सब किसी बुरे सपने की तरह मुझे भूल चुके हैं। पर मैं आज भी उसी पेड़ पर टंगी हुई हूं।देह तो दफन हो गई। पर रूह का क्या ?अब भी वही है।उसी बिसरा स्टेशन पर न्याय का इंतजार करते हुए।अपनी मुक्ति की राह देखते हुए।"3

कहानी के अंत में रेशमा द्वारा पूछा गया प्रश्न हम पाठक गण की ओर है। हम कैसे इस अन्याय को न्याय में बदलेंगे? कैसे स्त्री को मुक्ति की राह दिखाएंगे? रेशमा अपने लिए मात्र यह प्रश पूछ नहीं रही है, बलात्कार की क्रूर यातना को सहनेवाली सभी लड़कियों के लिए है। स्त्री को मात्र भोग्य वस्तु मानकर अपने पौरुष का पराक्रम दिखानेवाले पुरुषों को अपराधी मानने केलिए समाज तब तक तैयार नहीं होता जब तक उसके खिलाफ कोई कानूनी जांच पड़ताल नहीं आए। स्त्री से चुप रहने के लिए - परिवार की इज्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी। यदि कोई लड़की इसका खुलासा करती – कहते है। यदि वह खुलकर बताएगी तो घर है तो उसके वीरुध अफवाहें फैलने लगती हैं। अदालत में भी उससे ऐसे सवाल पूछे जाते हैं कि उसको लगता है कि उसका कई बार बलात्कार हो रहा है। जसिंता हमारे सामने कई सवाल रखती है। जैसे-

१. एक ही गलती के लिए स्त्री और पुरुष के साथ भिन्न-भिन्न व्यवहार क्यों?

२लड़की . की इज्जत पर ही क्या गांव और परिवार की इज्जत खड़ी है?

३घर . परिवार में स्त्री की क्या हैसियत है? पूरे परिवार के लिए हमेशा काम करती रहने वाली स्त्री के लिए उस घर में विश्राम के लिए भी एक जगह नहीं है। खुले वातावरण में खुला होकर उसे सोना पड़ता है। इसलिए गहरी नींद भी उसे कभी नहीं मिलती । अपनी मां के बारे में सोच कर रेशमा रहती है कि मां जैसी स्त्रियां जिंदगी में एक ही बार गहरी नींद सोती हैं , मृत्यु शय्या में । वर्जीनिया वुल्फ ने बरसों पहले अपनी पुस्तक 'ऑफ वंस ओन रूम' कहा था कि स्त्री को अपना एक कमरा होना चाहिए।।

४ घरेलु बलात्कार से स्त्री की मुक्ति कब होगी? रेशमा कहानी में रेशमा याद करती है कि उसकी मां यह कहा करती थी कि अच्छी तरह पढ़ना है और नौकरी पाना है। मां ने ऐसा क्यों कहा था यह रेशमा जानती है। मां भी अच्छी तरह पढ़ने वाली थी । जब वह आठवीं क्लास में हुई तो उसकी शादी हो गई । मां बताती थी कि वह शादी करना नहीं चाहती थी। लेकिन बाबा ही पीछे पड़ गए थे। अगर शादी नहीं हुई तो मर जाने का की धमकी भी उसने दी थी ।और शादी के बाद मां की पढ़ाई छूट गई । कच्ची उम्र में ही एक लड़के को जन्म दिया। और बच्चे बार-बार हुए। और दूसरे बच्चे के बाद ही बाबा दारू पीकर आने लगा और मां को पीटने लगा ।यह सच जानकर भी मां चुप रही कि उसके पति को अन्य स्त्रियों के साथ संबंध है। । अपने बच्चों को लेकर वह कहीं ओर भाग जाना चाहती थी ।एक बार वह गई भी । लेकिन सगे- संबंधियों ने उसे समझाया कि विवाहित लड़की का घर कहां होता है पति का घर ही उसका घर है। और मां मन मसोस कर वापस चली आई और इस आदमी के साथ जीती रही जो दिन रात उसे पर हाथ चलाता था । उसका क्रूर बलात्कार करता था। रेशमा सोचती है कि मां घर के भीतर और वह घर के बाहर बलात्कार के शिकार हुई।

'स्त्रियों का ईश्वर' शीर्षक अपनी कविता में जसिंता केरकेट्टा ईश्वर के ही अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाती है जो पुरुषों और स्त्रियों के साथ भिन्न-भिन्न व्यवहार करता है। कविता में वह कहती है कि -

पिता और भाई के हिंसा से

बचने के लिए मैं ने बचपन में ही

मां के ईश्वर को कसकर पकड़ लिया

मैं बड़ी होने लगी

और मां बूढ़ी होने लगी

हम दोनों के पास अब भी वही ईश्वर था

मां की मेहनत का हिस्सा

अब भी भाई छीन ले जाता

और शाम होते ही पिता

पीकर उस पर चिल्लाते

वे कभी नहीं बदले

ना मां के दिन कभी सुधरे

मैंने ऐसी ईश्वर को विदा किया

और खुद से पूछा

सबके हिस्से का ईश्वर

स्त्री के हिस्से में क्यों आ जाता है

क्यों उसके पास सबसे ज्यादा ईश्वर है

और उनमें से एक भी काम का नहीं

वह जीवन भर सबको नियमित पूजती है

फिर पूजे जाने और हिंसा सहने के लिए

ताउम्र बुत बनकर क्यों खड़ी रहती है?4

स्त्री पर हो रहे घरेलू हिंसा का परिचायक है ये पंक्तियां।

घरेलु हिंसा पर वर्जिनिया वूल्फ का कथन है सोचती हूं कि किसी ऐसे घर के बाहर फंस जाना ,जिसके दरवाजे पर बाहर से ताला लगा हो, कितनी दुखद स्थिति होती है।परंतु मुझे यह सोचकर और भी डर लगता है कि किसी ऐसे घर के अंदर फंस जाना जिसके दरवाजे पर बाहर से ताला लगा हो, यह भी उससे भी बदतर स्थिति है। अपनी प्रेमिका लड़की का बलात्कार करने के लिए दूसरे पुरुषों को अनुमति देने वाले पुर्ष की मानसिकता क्या है असल में वह प्रेम नहीं है। उसके लिए वह एक वस्तु मात्र है।

निष्कर्ष

जसिंता ने आदिवासी लड़की और स्त्री की बात इसमे कहा है। लेकिन इस में उठाई गयी समस्याएं सब स्त्रियों पर लागू हैं। इन यंत्रणाओं और पीड़ाओं से बचने के लिए स्त्री क्या कर सकती है? अपने आपको बचाना है और दूसरी स्त्रियों को मुक्ति की राह दिखाना है।

अगर गंभीरतापूर्वक इस बात पर विचार करें तो यही बात महत्वपूर्ण लगता है कि स्त्री शिक्षित हो जाए। जब तक शिक्षित होकर अपने पैरों पर खड़ी नहीं होती तब तक किसी प्यार -व्यार के चक्कर में नहीं पड़े। अपने आप से प्यार करें। अपने पर गर्व करें। अपनी अस्मिता को खूब पहचानें। किसी पुरुष द्वारा अपनी स्तुति सुनने के इंतज़ार में मत रहेम। अपना शरीर किसी की भोग लिप्सा की पूर्ति के लिए नहीं, यही मानिए। नोबेल पुरस्कार जेता टोनी मॉरिसन अपने 'जाज़'शीर्षक उपन्यास में कहा था " don't ever think I fell for you or fell over you। I didn't fall in love, I rose in it."स्त्रियों को प्रेरित करती हुई टोनी मॉरिसन ने यह भी कहा था कि तुम्हारी चाहत के अनुसार की किताब यदि तुम्हें नहीं मिली और यह भी समझ में आई कि वह अभी तक नहीं लिखी गई है तो तुम्हें लिखना है वह किताब। पुरुष के प्रेम में ही अपने जीवन की खुशी रहती है ऐसा कभी भी मत सोचना चाहिए। एक व्यक्ति के अस्तित्व और व्यक्तित्व को मिटानेवाला प्रेम सच्चा प्रेम नहीं है। महादेवी वर्मा अपनी 'श्रृंखला की कड़ियां 'नमक पुस्तक में कहती है यदि स्त्रियों को अपने स्वत्वों का वास्तविक ज्ञान हो तो उनकी अनेक दुर्दशाओं का पुरुषों द्वारा अंत होते देर न लगे।"नारी में परिस्थितियों के अनुसार अपने बाह्य जीवन को ढाल लेने की जितनी सहज प्रवृत्ति है, अपने स्वभावगत गुण न छोड़ने की आंतरिक प्रेरणा उससे कम नहीं। इसी से भारतीय नारी भारतीय पुरुष से अधिक सतर्कता के साथ अपनी विशेषताओं की रक्षा कर सकी है , पुरुष के समान अपनी व्यथा भूलने के लिए कादंबिनी नहीं मांगती ,उल्लास के

स्पंदन के लिए लालसा का तांडव नहीं चाहती। क्योंकि दुख को वह जीवन की शक्ति परीक्षा के रूप में ग्रहण कर सकती है और सुख को कर्तव्य में प्राप्त कर लेने की क्षमता रखती हैं। हमारी राष्ट्रीय जागृति इसे प्रमाणित कर चुकी है कि अवसर मिलने पर गृह के कोने की दुर्बल बंदिनी स्वच्छंद वातावरण में बलप्राप्त पुरुष से शक्ति में कम नहीं। अपने कर्तव्य की गुरुता भली- भांति हृदयंगम कर यदि हम अपना लक्ष्य स्थिर कर सके तो हमारी लोह श्रृंखलाएं हमारी गरिमा से गल कर मॉम बन सकती है इसमें संदेह नहीं।4

महिलाओं के प्रति पुरुष समाज की उपेक्षा और संवेदनहीनता एक ऐतिहासिक विषय है। मानव समाज के विकास के विभिन्न कालखण्डों में इसके विभिन्न स्वरूप रहे। आज जनतांत्रिक व्यवस्था में इन मुद्दों पर खुलकर बात हो रही है। यह अवसर इससे पहले उपलब्ध नहीं थे। इसीलिए ज्यों ज्यों- इन मुद्दों पर पुरुषवादी मानसिकता से मुठभेड़ की स्थिति आती है ,यह विषय चर्चा के लिए केंद्र में आते हैं।

आज हम जानते हैं कि बलात्कार की शिकार को हम शिकार नहीं कहते बल्कि अतिजीविता कहते हैं। आज स्त्रियां अपने ऊपर हो रहे तमाम अन्याय और शोषणों के प्रति जागरुक है और अवगत है। इन प्रताड़नाओं से बचकर वह आगे बढेगी। अगली पीढ़ी को खुले वातावरण की स्वतंत्र हवा का आस्वादन करने हेतु वह तैयार करेगी भी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वागर्थ ,अंक 329, अप्रैल 2023, पृ .सं .23
2. वही , पृ .सं .27
3. वही , पृ .सं .28
4. केरकेट्टा ,जसिंता ,ईश्वर और बाज़ार ,राजकमल प्रकाशन , प्र.सं.2022, पृ .सं .25
5. वर्मा, महादेवी, श्रृंखला की कड़ियां ,लोकभारती प्रकाशन ,चतुर्थ सं. पृ .सं .21.